Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 07-07-2023, Accepted: 23-07-2023, Published: 08-08-2023
Volume 4, Issue 2, 2023, Page No. 1-2

नारी शक्ति का परिचय देती कहानी–'गदल'

डॉ. विजय श्रावण घुगे
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, राणी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, पारोला, जलगाँव, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
नारी का मतलब होता है महिला और संयम अर्थात शक्ति। इस शब्द का पूरा मतलब होता है की नारी पुरुष से अधिक शक्तिशाली होती है। शक्ति उपासना का भारतीय चिंतन में बहुत बड़ा महत्व है। शक्ति ही संसार का संचालन कर रही है। शक्ति के बिना शिव भी शव की तरह चेतना शून्य माना गया है। स्त्री और पुरुष शक्ति और शिव के स्वरूप ही माने गए हैं।
भारतीय उपासना में स्त्री तत्व की प्रधानता पुरुष से अधिक मानी गई है। नारी शक्ति की चेतना का प्रतीक है। साथ ही यह प्रकृति की प्रमुख सहचरी भी है जो जड़ स्वरूप पुरुष को अपनी चेतना प्रकृति से आकृष्ट कर शिव और शक्ति का मिलन कराती है। साथ ही संसार की सार्थकता सिद्ध करती है।
नारीवाद का स्वर जबसे गुँजने लगा तब से ही पूरी दुनिया में नारीयों के संदर्भ में लिख जाने लगा। आधुनिक युग में कई तरह के विमर्शो ने हिंदी साहित्य में जगह बनाई, जौसे स्त्री–विमर्श, दलित–विमर्श, किन्नर विमर्श, दिव्यांग विमर्श, आदिवासी विमर्श तथा अन्यान्य विमर्शों ने साहित्यकारों, आलोचकों, पाठकों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया है। इन विमर्शों में सबसे अधिक चर्चा का विषय रहा तो श्स्त्री–विमर्शश। अँग्रेजी में यह श्फ़ेमिनिज्मश नाम से प्रचलित है। प्रारंभ में इसे नारीवाद कहा गया।

मूल शब्दः नारी शक्ति, स्त्री–विमर्श, दलित–विमर्श

रांगेय राघव : परिचय
रांगेय राघव का जन्म 17 जनवरी, 1923 को भरतपुर के वौर कस्बे में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री. रंगाचार्य, माता जी का नाम श्रीमती कनकवल्ली और पत्नी का नाम श्रीमती सुलोचना था। रांगेय राघव का परिवार मूल रूप से तिरूपती (आंध्र प्रदेश) का निवासी था। रांगेय राघव का मूल नाम तिरूमल्लौ नंबाकम वीर राघव आचार्य था लेकिन उन्होंने अपना साहित्यिक नाम रांगेय राघव रख लिया जो हिंदी साहित्य में एक सुपरिचित नाम बन गया। हिंदी के उनक विशिष्ट और बहुमुखी प्रतिभावाले रचनाकारों में से रांगेय राघव एक है जिन्होंने कम उम्र पाई मगर अल्पायु में ही कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार, निबंधकार, कवि, आलोचक, रिपोर्ताज के लेखक और इतिहासवेत्ता आदि रूप में स्वयं को प्रतिस्थापित कर दिया।

रांगेय राघव का साहित्य
रांगेय राघव का साहित्य निम्ननुसार हैं, उनके कहानी संग्रहों में संकलित कहानियाँ हैं, 'पंच परमेश्वर', 'अधूरी मूरत', 'अवसाद का छल', 'अवसाद का छल', 'गूंगे', 'भय', 'जानवर–देवता', 'प्रवासी', 'घिसटता कम्बल', 'कुत्ते की दुम और शौतान–नए टेक्नीक्स', 'पेड', 'नारी का विक्षोभ', 'काई', 'बांबी और मंतर', 'ऊंट की करवट', 'समुद्र के फेन', 'देवदासी', 'कठपुतले', 'नई जिंदगी के लिए', 'जाति और पेशा', 'तबेले का धुंधलका' और 'गदल' आदि। रांगेय राघव जी को कई सम्मान और पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया है जिनमें, हिन्दुस्तान अकादमी पुरस्कार (1951), डालमिया पुरस्कार (1954), उत्तर प्रदेश सरकार पुरस्कार (1957 और 1959), राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार (1961) और उन्हें 1966 में मरणोपरांत महात्मा गांधी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
रांगेय राघव जी की मृत्यु 12 सितंबर 1962 को महाराष्ट्र के मुंबई शहर हुई। हिंदी साहित्य में रांगेय राघव अपनी नवीन कथा प्रयोगों के कारण जाने जाते है।

विषय प्रवेश
नारीवाद का स्वर जबसे गुँजने लगा तब से ही पूरी दुनिया में नारीयों के संदर्भ में लिख जाने लगा। आधुनिक युग में कई तरह के विमर्शो ने हिंदी साहित्य में जगह बनाई, जौसे स्त्री–विमर्श, दलित–विमर्श, किन्नर विमर्श, दिव्यांग विमर्श, आदिवासी विमर्श तथा अन्यान्य विमर्शों ने साहित्यकारों, आलोचकों, पाठकों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया है। इन विमर्शों में सबसे अधिक चर्चा का विषय रहा तो श्स्त्री–विमर्शश। अँग्रेजी में यह 'फ़ेमिनिज्म' नाम से प्रचलित है। प्रारंभ में इसे नारीवाद कहा गया।
प्रस्तुत कहानी 'गदल' की शुरूआत गदल और उसका बडा बेटा निहाल के झगडे से शुरू होती है। 'गदल' खारी गुजर समाज की होकर, चार बच्चों की माँ होकर दूसरे लोहार गुजर के साथ जा बसी है। इसकारण निहाल अपनी माँ गदल को कहता है, ''हत्यारिन। तुझे कत्ल कर दूँगा।''[1] तो गदल भी कहती है, ''करके तो देख ! तेरे कुनबे डायन बनके न खा गई, निपूते।''[2] डोडी निहाल और गदल का झगडा देखकर उन्हें चुप रहने के लिए कहता है।
गदल के भाग जाने के कारण घर की बहुएँ भी गदल पर ताना कसती है। डोडी जब गदल सू पूछता है, 'खाना खाया क्या ? 'तब निहाल की पत्नी कहती है, ''अरे, अब लौहारों की बौयर आई है, उन्हें क्या गरीब खारियों की रोटी भाएगी।''[3] इतना ही नहीं बेटा निहाल भी कहता है कि, ''सुन ले परमेसुरी, जगहँसाई हो रही है। खारियों की तो तून नाक कटाकर छोडी।''[4] सभी गदल से नाराज है इसलिए गदल से कोई सीधे मुँह बात नहीं करता।
गदल का भरा–पूरा परिवार है। उसके पति गुन्ना मर चुका है। गदल का बडा निहाल है, जो तीस बरस का है, छोटा नरायन है। दो बेटियाँ ही चम्पा और चमेली, दोनों की शादियाँ हो चुकी है। बेटों की भी शादियाँ हो चुकी है, घर में नाती–पोती है, ऐसा भरा–पुरा परिवार है। डोडी की बीबी मर गई है, उसके बेटे भी मर गए है। वह अकेला होकर भी दूसरी शादी नहीं करता। गुन्ना और गदल के बेटों को अपना बेटा मानता है, उन्हीं के साथ रहता है।
गदल और डोडी में रात को बातें होती है तो गदल अपने दिल की बात अपने देवर डोडी को बता देती है। डोडी भी कहता है

कि जगहँसाई के कारण उसने उससे शादी नहीं की। तो गदल कहती है, ''कायर! भौया तेरा मरा, कारज किया बेटे ने और फिर जब सब हो गया, तब तू मुझे रखकर घर नहीं बसा सकता था।''[5] तो डोडी कहता है, ''गदल, मैं बुड्ढा हूँ। डरता था, जग हँसेगा। बेटे सोचेंगे, शायद चाचा का अम्मा से पहले से ही नाता था, तभी तो चाचा ने दूसरा ब्याह नहीं किया। गदल, भौया की भी बदनामी होती है न? ''[6]

गदल रात को वापस भाग जाती है। उसे आते देख उसकी जेठानी जो उम्र में कम है पर रिश्ते में बडी है वह कहती है, 'आ गई देवरानीजी। रात कहाँ रहीं?' गदल उसे जवाब देती है, ''सो, जिठानी मेरी ! हुकुम नहीं चला मुझ पर। तेरी जौसी बेटियाँ है मेरी। देवर के नाते देवरानी हूँ, तेरी जूती नहीं।''[7] उतने में गदल का दूसरा पति मौनी आ जाता है जो जाती से लौहार गुजर है और उम्र मे गदल के बडे बेट निहाल जितना है। वह खाना खाकर चला जाता है। दोपहर में गदल का छोटा बेटा नरायन आता है और पंचायत की बात करता है, दण्ड भरवाने की बात करता है तो गदल अपने सारे गहने उतारकर उसे दे देती है और कहती है कि दण्ड भर देना। मौनी जब इस बात से नाराज हो जाता है और कहता है, 'बहुत बढ–चढकर मत हाँक। समझ ले, घर में बहू बनकर रह।' गदल मौनी को जवाब देती है, ''अरे तू तो तब पौदा भी नहीं हुआ था बालम। तब से मैं सब जानती हूँ। मुझे क्या सिखाता है तू? ऐसा कोई काम नहीं किया है, जो बिरादरी के नेम के बाहर हो। जब तू देख मैंने ऐसी कोई बात की हो, तो हजार बार रोक, पर सौत की ठसक नहीं सहूँ ''[8]

डोडी गदल के इस तरह दूसरे जाति के आदमी के साथ चले जाने के कारण दुःखी हो जाता है। उसे पुरानी यादें सताती है। वह मनमौजी बाबा की धूनी ओढता है, ढोला सुनने जाता है। वह निहाल से कहता है, ''अरे, तो बेटा। मैंने ढोला कितने दिन बाद सुना है। उस दिन भौया की सुहागरात को सुना था, या फिर आज. . . ''[9] यह कहकर डोडी आँख मींचकर कुछ गुनगुनाने लगता है। डोडी गदल की याद में मर जाता है। उधर यह बात गदल को पता चलती है। वह आना चाहती है, पर मौनी उसे रोक लेता है। उसे मौनी पर गुस्सा आता है, वह कहती है, ''तू रोकेगा? अरे मेरे खास पेट के जाए मुझे रोक न पाए ! अब क्या है? जीसे निचा दिखाना चाहती थी, वही न रहा और तू मुझे रोकने वाला है कौन ? अपने मन से आई थी, रहूँगी, नहीं रहँगी, कौन तूने मेरा मोल दिया है। इतना बोल तो भी लिया तू, जो होता मेरे घर में, तो जीभ कढवा लेती तेरी।''[10] डोडी के मरने के बाद गदल को भी बडा दुःख होता है, क्योंकि डोडी उससे शादी नहीं करता इसका बदला लेने के लिए गदल दूसरी शादी करती है, पर अब वही नहीं रहा तो गदल को पछतावा होता है।

गदल भाग जाती है, पर डोडी के मृत्युभोज को लेकर बिरादरी साशंक है। क्योंकि कानून होता है कि पच्चीस से जादा लोग इकट्ठा न हो। पर गदल पुलिस को रिश्वत देकर बडे मृत्युभोज का आयोजन करती है। बहुत सारे लोग मृत्युभोज में आते है, मौनी गदल से बदला लेने के लिए बडे थानेदार साहब से शिकायत कर देता है। पुलिस के आदमी आकर भोज रोकने की बात करते है। आया हुए पुलिस से गदल कहती है, ''आदमी का वजन एक बार का होता है। हम बिरादरी को नहीं उठा सकते।''[11] गदल डरती नहीं और आये हुए पुलिस को भी खाना खाने के लिए कहती है। पुलिस हथियारबंद होकर वहाँ पहुँचती है। मृत्युभोज की आखरी पंक्ति चालू होती है, गदल चाहती है कि वह खत्म हो जाए तो झंझट ही खत्म हो जायेगा।

पुलिस हथियारबंद होकर आती है, नरायन भी चार आदमी बंदुकों के साथ लेकर छत पर बौठ जाता है। पुलिस के पास आधुनिक बंदुके है तो इनके पास पुरानी वाली बंदुके। लेकिन गदल पीछे हटना नहीं चाहती है, भोज चलता रहता है। पुलिस गोलियाँ चलाने लगती है तो गदल अपने दोनों बेटों और रिश्तोंदारों को पिछले के दरवाजे से भगा देती है और स्वयं एक बंदुक लेकर छत पर चली जाती है। निहाल जाना नहीं चाहता है तो वह कहती है, ''तुझे मेरी कोख की सौगन्ध है। नरायन को बहु–बच्चों को लेकर निकल जा पीछे से।''[12] यहाँ पर गदल की ममता की झलक देखने को मिलती है। यही वहीं माँ है जो बेटे के कुनबे को डायन बनकर खाने की बात कर रही होती है और आज वहीं माँ मृत्यु सामने देख बेटे की सलामती चाहती है। गदल एक निडर औरत है। गदल छत पर चढकर गोली चलाती है। पुलिस उसे घेर लेती है, एक गोली उसके पेट में लग जाती है।

दरोगा आकर पूछता है, 'तू कौन है? ''गदल कहती है, ''कारज हो गया, दरोगाजी। आत्मा को शांति मिल गई।'' दरोगा फिर पूछता है, ''पर तू है कौन?'' तब गदल जो जवाब देती है, उसी जवाब से गदल का डोडी से कितना निश्चल और पावन प्रेम था यह स्पष्ट हो जाता है, वह कहती है, ''जो एक दिन अकेला न रह सका, उसी की . . .।''[13] कहानी यहाँ पर समाप्त होती है पर गदल की निःस्सीम प्रेम भावना की अभिव्यक्ति को सफल कर।

निष्कर्ष

1. नारी शक्ति की चेतना का प्रतीक है। साथ ही यह प्रकृति की प्रमुख सहचरी भी है जो जड़ स्वरूप पुरुष को अपनी चेतना प्रकृति से आकृष्ट कर शिव और शक्ति का मिलन कराती है। साथ ही संसार की सार्थकता सिद्ध करती है।
2. रांगेय राघव एक ऐसा नाम है जिन्होंने कम उम्र पाई मगर अल्पायु में ही कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार, निबंधकार, कवि, आलोचक, रिपोर्ताज के लेखक और इतिहासवेत्ता आदि रूप में स्वयं को प्रतिस्थापित कर दिया।
3. प्रस्तुत कहानी में गदल केन्द्रीय चरित्र के रूप में शक्ति का प्रतीक है।
4. गदल एक ग्रामीण स्त्री होते हुए भी, गदल के अपने मूल्य है। गदल की अपनी सोच है, वह अपने पति के मरने के बाद देवर से ब्याह करना चाहती है, वह बिरादरी के बारे में नहीं सोचती।देवर मर जाने के बाद वह बिरादरी से ऊपर शासन को नहीं मानती।
5. गदल का व्यक्तित्व द्वंद्वात्मक है, वह विद्रोही है। गदल का चरित्र लेखक ने इस कहानी में बखुबी चित्रित किया है।
6. गदल एक शक्तिशाली चरित्र है, जो प्रेम और मर्यादा की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुती भी दे सकती है।
7. गदल निम्न जाति की होने के बावजूद भी उसे उसका सम्मान बिरादरी और कानून से बडा लगता है।
8. गदल अपने व्यक्तित्व की गरिमा की रक्षा हर स्तर पर करती हुई दिखाई देती है। गदल कहानी के माध्यम से रांगेय राघव जी ने नारी शक्ति का परिचय दिया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. राघव रांगेय, रांगेय राघव की कहानियाँ, (गदल), पृ. क्र. ३२
2. वही पृ. क्र. ३२
3. वही पृ. क्र. ३५
4. वही पृ. क्र. ३६
5. वही पृ. क्र. ३६
6. वही पृ. क्र. ३८
7. वही पृ. क्र. ३८
8. वही पृ. क्र. ३६
9. वही पृ. क्र. ३६
10. वही पृ. क्र. ४०
11. वही पृ. क्र. ४०
12. वही पृ. क्र. ४१
13. वही पृ. क्र. ४१